हिन्दी नवरत्न

गोपाल प्रधान

हिंदी नवरत्न

हिंदी आलोचना की पहली किताब

गोपाल प्रधान

गोपाल प्रधान

जन्म : पिता की नौकरी के कारण बंगाल के बर्दवान जिले में।

निवास : उ. प्र. के गाजीपुर जिले के छोटे से गाँव सुल्तानपुर में।

शिक्षा : बी. एच. यू. और जे. एन. यू. से।

किताबें : रवीन्द्रनाथ ठाकुर का शिक्षा दर्शन, आर्नल्ड हाउजर की कला का इतिहास दर्शन, वर्जीनिया वुल्फ की अपना कमरा तथा बाटमोर की समाजशास्त्र का अनुवाद; छायावाद युगीन साहित्यिक वाद-विवाद (स्वराज से) और चेखव की जीवनी प्रकाशित हैं।

फिलहाल असम विश्वविद्यालय, सिलचर में हिन्दी का अध्यापन।

विषयानुक्रमणिका

भूमिका

4

1. हिंदी नवरत्न का संक्षिप्त परिचय

7

2. पृष्ठभूमि में भारतेन्दुयुगीन आलोचना

37

3. वाद-विवाद और 'हिंदी नवरत्न'

45

4. परवर्ती प्रभाव

58

5. मिश्रबंधुओं की आलोचना: दृष्टि और योगदान

73

6. उपसंहार

85

परिशिष्ट: मिश्रबंधु और नायिका भेद

90

भूमिका

'हिंदी नवरत्न' हिंदी आलोचना की पहली किताब है। एम.फिल. का लघुशोध प्रबंध मैंने इसी किताब पर लिखा था। उसी शोध प्रबंध का किंचित् परिवर्तित रूप यह पुस्तक है।

हिंदी आलोचना में मेरी रुचि शुरु से ही रही है। लेकिन शुक्ल पूर्व हिंदी आलोचना के बारे में इतनी कम जानकारी थी कि जब डॉ. मैनेजर पांडेय ने मेरे सामने 'हिंदी नवरत्न' पर शोध का प्रस्ताव रखा तो पहली बार में मुझे लगा जैसे यह पुस्तक कोई काव्य संग्रह हो। इसीलिए विषय के चुनाव से लेकर इस पुस्तक के लिखे जाने तक यह सम्पूर्ण कार्य वस्तुत: उन्हीं की प्रेरणा और उत्साह का फल है।

हिंदी आलोचना के अधिकांश इतिहास ग्रंथों में 'हिंदी नवरत्न' का उल्लेख मात्र किया जात है। इसके लेखक मिश्रबंधुओं का वर्णन भी गाढ़े स्याह रंग में किया जाता है ताकि इसकी पृष्ठभूमि में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की प्रतिभा और भी उज्ज्वल होकर सामने आए। आचार्य शुक्ल की मौलिकता और प्रासंगिकता ऐसे अनैतिहासिक प्रयासों की मुखापेक्षी नहीं है लेकिन जब आचार्य शुक्ल के आगमन को हिंदी आलोचना के सूने आकाश में अकस्मात चमक जानेवाली बिजली की तरह दिखाया जाता है जिसके तेज के आगे आंखें चुंधिया जाती हैं, तो हिंदी आलोचना के इतिहास में रुचि रखनेवाले विद्यार्थी की समझ अवश्य धुंधली पड़ जाती है। आचार्य शुक्ल अचानक नहीं अवतरित हुए वरन् उन्होंने अतीत से बहुत कुछ ग्रहण किया और 'हिंदी नवरत्न' को भी उन्होंने परंपरा के रूप में प्राप्त किया। यह पुस्तक 'हिंदी नवरत्न' को हिंदी आलोचना की विकास परंपरा में रखकर देखने का प्रयास है।

इस कार्य को संपन्न करते हुए मुझे लगातार समय और सामग्री का अभाव खटकता रहा। यदि प्रचुर सामग्री मिली होती और पर्याप्त समय होता तो निश्चित रूप से इससे बेहतर काम किया जा सकता था। उदाहरण के लिए सिर्फ 'हिंदी नवरत्न' और 'संक्षिप्त नवरत्न' के कुल मिलाकर दस संस्करण मिश्रबंधुओं के जीवनकाल में प्रकाशित हुए जिनमें उन्होंने लगातार संशोधन परिष्कार किया। लेकिन मुझे इन दोनों के महज अंतिम संस्करण

ही प्राप्त हो सके। अन्य संस्करणों के लिए सहायक ग्रंथों / लेखों पर ही निर्भर रहना पड़ा। दूसरे, यह पुस्तक बहुत कुछ इतिहास या 'मिश्रबंधु-विनोद' की तैयारी थी, इसीलिए उसे भी पढ़ा जाना चाहिए था। किंतु उस 'भारी कविवृत्त संग्रह' को पढ़ने का अवकाश ही मुझे नहीं मिल सका।

इस पुस्तक के पहले अध्याय में मैंने 'हिंदी नवरत्न' का संक्षिप्त परिचय दिया है जिसमें 'नवरत्न' के उद्देश्य व उसके सारांश को शामिल किया गया है।

दूसरे अध्याय में 'नवरत्न' के प्रकाशन के पहले की हिंदी आलोचना की मोटी रूपरेखा प्रस्तुत की गई है। ताकि उस पृष्ठभूमि को समझा जा सके जिसमें यह पुस्तक प्रकाश में आई।

तीसरे अध्याय में द्विवेदी युग में इस पुस्तक पर चलने वाले वाद-विवादों के बीच रखकर इसके मूल्यांकन का प्रयास किया गया है। वाद-विवादों के क्रम में उन प्रवृत्तियों को रेखांकित किया गया है जो बाद की आलोचना में और पुष्ट हुईं।

चौथे अध्याय में इस पुस्तक के परवर्ती प्रभावों की चर्चा की गई है, विशेषकर आचार्य शुक्ल और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की मान्यताओं पर।

पांचवे अध्याय में मिश्रबंधुओं की आलोचना-दृष्टि का विवेचन करते हुए हिंदी आलोचना में उसके योगदान का मूल्यांकन किया गया है।

और अंत में उपसंहार में समूचे शोध के सामान्य निष्कर्षों का प्रतिपादन किया गया है।

पुस्तक के अंत में परिशिष्ट के बतौर डॉ. रामविलास शर्मा की एक टिप्पणी भी दी जा रही है। यह टिप्पणी रामविलास जी की किताब 'विरामचिन्ह' से ली गई है। हिंदी के प्रथम आलोचकों के बारे में हिंदी के इस महानतम आलोचक के विचार मिश्रबंधुओं को सही संदर्भ में समझने में मदद करते हैं। इस टिप्पणी की ओर मेरा ध्यान महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में अध्ययनरत छात्र भागवत प्रसाद ने दिलाया।

इस काम को करते हुए मुझे डॉ. मैनेजर पांडेय से दृष्टि और बल दोनों प्राप्त हुए। उन्हें धन्यवाद देते हुए मैं अपने बनारस के मित्र सुरेंद्र कुमार सारंग को भी धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने मेरे कार्य को अपना कार्य समझकर मुझे मदद पहुंचाई। बाकी सबके सहयोग का ही तो फल है यह पुस्तक। इसलिए इसकी सफलता ही उनके लिए